अध्ययन सामग्री
बी॰ए॰ (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्न पत्र - चतुर्थ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰)

14.05.20

उगितश्च

शब्दार्थ है - (च) और (उगितः) उगित् से। किन्तु क्या होता है और किस स्थिति में होता है इसका पता सूत्र से नहीं चलता है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से 'ङीप्' तथा अधिकार सूत्र 'इयाप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' की अनुवृत्ति करनी होगी। 'स्त्रियाम्' का अधिकार तो है ही। 'उगित्' का अर्थ है - जिसका उक् इत् हो। 'उक्' प्रत्याहार है और उसमें उ, ऋ और ऌ का समावेश होता है। यह 'उगित' प्रातिपदिक का विशेषण है। इसलिए 'येन विधिस्तदन्तस्य' सूत्र से उसमें तदन्त विधि हो जाती है। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा - उगिदन्त प्रातिपदिक

(जिसका अन्त्य उकार, ऋकार या ऌकार इत् हो) से स्त्रीलिङ्ग में 'ङीप्' (ई) प्रत्यय होता है।

उदाहरण — 'भू' धातु से 'उवतुप्' प्रत्यय लेकर सिद्ध हुआ 'भवत्' शब्द उदित्त है, अतः प्रकृत सूत्र से ङीप् प्रत्यय होने पर भवत् ई = भवती रूप सिद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त ऋकार इत् होने के कारण शतृ-प्रत्ययान्त और उकार इत् होने से 'ईयसुन्' प्रत्ययान्त शब्द भी उदित्त होते हैं, अतः इनसे भी स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

उदाहरण — भू धातु से 'शतृ' प्रत्यय होकर सिद्ध हुए 'भवत्' शब्द से ङीप् प्रत्यय हो भवत् ई रूप बनता है। तब 'शपश्यनोः नः' सूत्र से 'नुम्' आगम हो भवन्त ई = 'भवन्ती' रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार शतृ प्रत्ययान्त 'पचत्' और 'दीव्यत्' से भी क्रमशः पचन्ती (पकाती हुई) और दीव्यन्ती (खेलती हुई) रूप बनते हैं।

ईयसुन प्रत्ययान्त के उदाहरण श्रेयसी (कल्याणकारिणी) और पटीयसी (अति चतुर स्त्री) आदि रूपों में मिलते हैं। यहाँ ईयसुन प्रत्ययान्त 'श्रेयस्' और 'पटीयस्' से ङीप् प्रत्यय होकर क्रमशः 'श्रेयसी' और 'पटीयसी' रूप बनते हैं।

रूपसिद्धिः —

पचन्ती

पचन्ती — पच् धातु से लट् के स्थान पर 'लटः शतृ-शानचावप्रथमासमानाधिकरणे' से लट् के स्थान में 'शतृ' प्रत्यय होने पर — पच् शतृ

'लशक्वतद्धिते' से श् की इत्संज्ञा

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से ऋ की इत्संज्ञा होती है।

(श एवं ऋ) अनुबन्ध लोप के बाद 'शप्' होने पर

पच् अ अत् की स्थिति में

'अतो गुणे' से पररूप होकर 'पचत्' शब्द बनता है।

'शप्श्यनोर्नित्यम्' से नित्य ही 'नुम्' का आगम होता है। नुम् में उकार मकार का अनुबन्ध लोप होने पर नकार शेष रहता है। पचन्त् शब्द में 'उगितश्च' सूत्र से ङीप् होने पर

पचन्त् ङीप् — पचन्ती शब्द बनता है।

(ङकार की इत्संज्ञा 'लशक्वतद्धिते' से तथा पकार की इत्संज्ञा 'हलन्त्यम्' से 'तस्य लोपः' से लोप होने के बाद शेष 'ई' रहता है)

पचन्ती शब्द से 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'सु' विभक्ति आती है। — पचन्ती सु

'सु' के 'उ' की इत्संज्ञा 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से होती है, 'तस्य लोपः' से लोप

पचन्ती स्

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप होने पर 'पचन्ती' प्रयोग सिद्ध होता है।

भवन्ती — भू धातु से लट् के स्थान में 'लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे' से शतृ प्रत्यय होने पर

भू शतृ

'लशक्वतद्धिते' से 'श' की इत्संज्ञा 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से ऋकार की इत्संज्ञा अनुबन्ध लोप (श् एवं ऋ) के बाद शप् होने पर

भू अ अत् की स्थिति में

'इको यणचि' से भू 'उ' के स्थान पर व्

भ् व् अ अत् — 'भवत्'

(अतो गुणे से पररूप होकर) भवत् शब्द बनता है।

भवत् शब्द उगिदन्त है। इसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। ऐसे उगिदन्त प्रातिपदिक से 'उगितश्च' सूत्र से ङीप् प्रत्यय हुआ।

ङीप् में ङकार की इत्संज्ञा 'लशक्वतद्धिते' से तथा पकार की इत्संज्ञा 'हलन्त्यम्' से हुई।

इत्संज्ञा लोप होने पर 'ई' शेष रहा।

भवत् ङी

'शप्श्यनोर्नित्यम्' से नुम् का आगम हुआ।

नुम् में उकार मकार का अनुबन्ध लोप होने पर नकार शेष रहा।

भवन्त् ई — भवन्त ई — भवन्ती पद बनता है।

('शप्श्यनोर्नित्यम्' का अर्थ है - नदी संज्ञक और श्री परे रहने पर शप् और श्यन् के अकार से परे जो शतृ प्रत्यय का अवयव 'नुम्' होता है)

'भवन्ती' शब्द से 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति

भवन्ती सु

'अदेशोऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा, 'तस्य लोपः' से लोप, भवन्ती स्

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्पृक्तं हल्' से 'स्' का लोप होने पर **भवन्ती** प्रयोग सिद्ध होता है।